सुरेन्द्र झा 'सुमन'

जन्म : 9 अक्टूबर 1910 ई०।

मृत्यु : 2002 ई०

जन्म-स्थान : बल्लीपुर (समस्तीपुर)।

कृति : **मौलिक काव्य संग्रह** - 'प्रतिपदा', 'अर्चना', 'साओन-भादव', 'पयस्विनी', 'अंकावली', 'अन्तर्नाद', 'भारत वन्दना', 'उत्तरा (खण्ड काव्य) 'दत्तवती' (महाकाव्य) आदि।

अनूदित पोथी– 'पुरुष-परीक्षा', 'अनुगीतांजलि', 'ऋतु- शृंगार', आदि।

सम्पादित– 'वर्णरत्नाकर', 'पारिजात हरण', 'कृष्णजन्म', 'आनंद-विजय' आदि।

पुरस्कार : **'पयस्विनी'** काव्य-संग्रह पर साहित्य अकादमी सँ 1971 ई० मे पुरस्कृत।

1981 ई. मे **'उत्तरा'** (खण्ड काव्य) पर मैथिली अकादमीक प्रथम विद्यापति पुरस्कार।

पारम्परिक दृष्टिकोणमे नवीनताक सूत्रक अन्वेषक, मैथिली, संस्कृत ओ हिन्दीमे निष्णात रससिद्ध कवि 'सुमन'जी साहित्याचार्यक डिग्रीक उपरान्त उच्च विद्यालयमे अध्यापन, 1935-1954 धरि मिथिला मिहिरक सम्पादन, 1953 मे चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज दरंभगामे मैथिली प्राध्यापक, पुनः ल०ना० मि० वि० वि०क स्नातकोत्तर मैथिली विभागाध्यक्षक पदकेँ सुशोभित कयलनि। 82 ई० मे पुनः 'स्वदेश' पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ कयलनि। तीसगोट मौलिक काव्य पुस्तक प्रकाशित एवं अनूदित आ सम्पादित कृतिक संख्या लगभग पन्द्रह अछि।

काव्य-संदर्भ: एहि कवितामे कवि निःस्वार्थ भावेँ काज कयनिहार ओहन किसानक महत्ताक चित्रण कयलनि अछि जे आजुक पूंजीवादी व्यवस्थामे सेहो प्रासंगिक होइतहुँ, एखनहु उपेक्षित छथि। जतय कोनहु व्यक्तिगत स्वार्थ अथवा सामाजिक हितक लेल हल धारण कयनिहार बलराम ओ राजा जनक समृद्ध ओ पूज्य छथि ततय पारम्परिक किसान अपन ओही सामान्य स्थितिमे निर्वाह करबा लेल विवश छथि।

हलधर

[1]

नील चीर मण्डित ओ, सहजहिँ
अहाँक नीलम कान्ति
दमन हेतु उठबथि हर ओ,
व्रत अहँक अहिंसा-शान्ति ॥

यमुना जल कर्षथि कोपेँ
अहँ दये नहरिसँ पानि ।
दुर्योधन-संगी ओ, चलइत
अहाँ धर्महिक बानि ॥

ओम्हर मदिर कादम्बरी, एम्हर
कादम्बिनी रस कूप ।
कृष्ण-सहोदर ओ छथि, सहजहिं
कृष्णेँ अहँक स्वरूप ॥

हुनक रेवती प्रिया हन्त !
भदवा धरि बारलि एक ।
आर्द्रा सँ स्वाती धरि अनु-
गामिनि अहाँक अनेक ।

छी युग-युगक अहाँ हलधर
ओ छला द्वापरक अन्त
तुलना अहँक कतय सँ पौता
लागल एक परन्तु ॥

ओ बलराम स्वयं, अहाँक छथि
निर्बल केर बल राम ।
इन्द्रप्रस्थ धरि हुनक हुकूमति
खेतहुँ अहाँ गुलाम ॥

[2]

जखन अकाल-ग्रस्त जन जोतय
यज्ञ-वाट, हर लेल,
सीता उपजा आनि अपन घर
जनक जगमगा देल ॥

काल-अकाल नियमसँ चलबी
खेत-खेत हर नित्य ।
घर-घर अन्नपूर्णा बाँटब
धन्य अहँक हो कृत्य ॥

त्रेता केर हलधर भोगक सङ
योग कयल निर्वाह ।
किन्तु अहँक स्वप्नहु ने भोगमे
हे ! योगी हरबाह !!

समता अहँक कतयसँ करता
जनकपुरक श्रीमान ?
किन्तु विदेह वैह कहबै छथि,
माँटिक अहाँ किसान !!

धरती सुत! अहींक कवितासँ
हरित-भरित संसार ।
गढ़ि आखर दस-पाँच धन्य कवि
कहबी अहाँ गमार ॥

जे अणु गढ़ि विध्वस्त करथि जग
धन्य हुनक विज्ञान !
कण-कण आविष्कार लोक-हित
अहिँक तिरस्कृत ज्ञान !!

भूमि-फलक पर दूर क्षितिज धरि
शस्यक चित्र महान !
हर तूली अछि सकल अहँक
हे कलाकार ! रुचिमान !!

●

शब्दार्थ — चीर = वस्त्र; कर्षथि = जोतथि; मदिर = मदमस्त; कादम्बरी = कोकिला; कादम्बिनी = मेघमाला; रेवती = बलरामक पत्नी, दुर्गा; शस्य = फसिल; श्रेष्ठ; हलधर = हरकेँ धारण कयनिहार अर्थात् किसान; विदेह = बिना देहक, अर्थात् राजा जनक।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. हलधरक की अभिप्राय ? कवि बलराम ओ जनकसँ हुनक तुलना किएक कयलनि अछि ?
2. कवि हरबाहकेँ योगी किएक कहलनि अछि? प्रस्तुत कविताक आलोकमे हरबाहक कृत्यक वर्णन करू ।
3. हलधर कविताक सारांश लिखू ।
4. हलधर शीर्षक कवितामे यदि कोनो नदीक नाम देल गेल अछि तँ तकर नाम लिखू ।
5. उक्त कविता मे जे सर्वनाम शब्द प्रयुक्त भेल अछि तकरा सभक प्रयोग वाक्यमे करू।
6. मिथिलाक ग्रामीण परिवेशक आलोकमे हलधरक सामान्य दशाक वर्णन करू ।

गतिविधि :

1. उक्त शीर्षकमेसँ संज्ञाक चयन कऽ लिखू एवं वाक्यमे प्रयोग करू ।
2. आर्द्रा, स्वाती आदि नक्षत्रक विषयमे छात्र आपसमे चर्चा करथि।
3. सीता धरतीसुता छथि, कोना ? एकर चर्चा छात्र लोकनि आपसमे करथि।
4. सीताक हरण एक पैघ समस्याक निदान छल। छात्र लोकनि अपन-अपन तर्क देथि आ पुष्ट करथि।
5. 'हलधर' शीर्षक कोनो आओर कवि लिखने छथि? अपन पुस्तकालयमे ताकू ।
6. मिथिलाक ग्रामीण परिवेशक आलोकमे हलधरक सामान्य दशाक वर्णन करू ।

निर्देश :

(क) वैज्ञानिक आविष्कार, अभिशाप वा वरदान अछि– छात्रसँ वाद-विवाद कराबथि।

(ख) सीताक जन्मक विषयमे शिक्षक छात्रकेँ बताबथि।

(ग) बलरामकेँ हलधर किएक कहल गेल छनि? एकर कथा शिक्षक छात्रसँ कहथि ।

(घ) शिक्षक छात्रकेँ राजा जनक अथवा विदेहक क्रियाकलापक विषयमे जनतब देथि।

(ङ) शिक्षक जनकपुरक विशेषताक जनतब छात्रकेँ देथि ?

□